

Serial No. 92



**The knowledge of
32 Aagams
in your phone**

To subscribe please  Watts app - Jai Jinendra on +91 8104461579



Inspired by Rashtrasant Param Gurudev Shree Namramuni Maharaj Saheb



"A roller coaster ride through feelings untold, From
Ashubh to Shubh, and finally towards Shudh as pure as gold.
 Embrace each emotion, let them guide your way,
 From purity to enlightenment, every day!".

आगम गाथा



सोही उज्जुय भूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिंदुई।
निंत्वाणं परमं जाई, घयसिंत्तिं व्व पावअे ॥

अर्थ

Dharma becomes stable and strengthens only in a very simple and straight-forward person and only such a soul can purify himself. Only those who practice such a religion can attain ultimate Salvation i.e. Siddhatva

सरल स्वभाव वाली आत्मा शुद्ध हो जाती है और शुद्ध, सरल आत्मा में ही धर्म टिक सकता है। जिसके जीवन में धर्म है, वही परम निर्वाण को प्राप्त कर सकता है।

What is Bhaav?

भाव यानि?

"Bhaav" refers to the inner intention or feeling behind one's actions. The purity of one's intentions is as important as the actions themselves.

It is essential to think good thoughts and have positive intentions.

- ✓ Whether it's giving (Daan),
- ✓ Practicing discipline (Sheel),
- ✓ Performing penance (Tapp)

The right "Bhaav" means doing all the things not just for show but with a genuine desire to help others, improve oneself and shed one's karma.

So, when practicing any good deed, remember, it's the kindness and compassion in your heart that truly counts.



भाव, किसी भी कार्य के पीछे छुपे आंतरिक इरादे या भावनाओं को दर्शाता है। किसी कार्य की उत्कृष्टता में, इरादे की पवित्रता उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितना महत्वपूर्ण कार्य स्वयं है।

अच्छे विचारों को सोचना और सकारात्मक इरादे रखना महत्वपूर्ण है।

- ✓ चाहे वह दान करना हो (दान),
- ✓ नियमित जीवन जीना हो (शील),
- ✓ या तपस्या करना हो (तप)



सही 'भाव' का अर्थ है कि सभी कार्यों को सिर्फ दिखावे के लिए नहीं किया जाए, बल्कि दूसरों की सहायता करने, अपने आत्मगुणों को पाने और कर्मों को क्षय करने के लिए किया जाए।

जब, किसी भी अच्छे कार्य को आरंभ करते हैं, तब याद रखें, वास्तव में महत्वपूर्ण है आपके हृदय के सच्चे भाव और दूसरों के प्रति मन में दया और करुणा।

There are 3 types of Bhaav-भाव के तीन प्रकार हैं



Ashubh Bhaav
अशुभ भाव

Shubh Bhaav
शुभ भाव

Shuddh Bhaav
शुद्ध भाव

Ashubh Bhaav - To get angry

अशुभ भाव - क्रोध आना

Shubh Bhaav - To remain calm, even though annoyed

शुभ भाव - जब क्रोध आए तब शांत रहना

Shuddh Bhaav - When anger strikes remain calm & forgive

शुद्ध भाव - जब क्रोध आए तब शांत रहकर क्षमा देना

Your future depends on your Bhaav (current behavior)...

Your next birth's(gati) will be determined by your Bhaav (present behavior)...

आपका भविष्य आपके भाव(आज के व्यवहार) पर निर्भर करता है... ।

आपका अगला जन्म किस गति में होगा, वह आपके भाव(आज के व्यवहार) पर निर्भर करता है... ।

01



**Manushya
Gati**

02



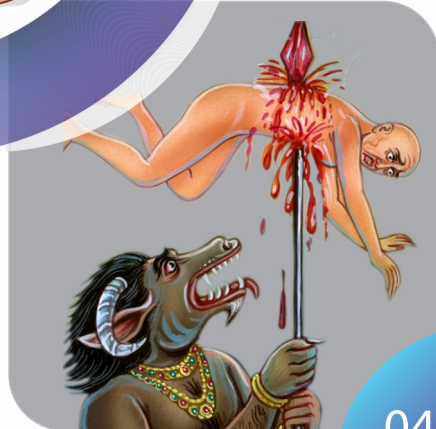
**Dev
Gati**

**Tiryanch
Gati**



03

**Narak
Gati**



04




We can take birth in
any of the above 4 gati's.

Whats your choice?

आपका चुनाव क्या होगा?

So, which gati would you prefer for your next birth?
तो, आप अपने अगले जन्म के लिए कौनसी गति को पसंद करेंगे?

Put a  on your choice

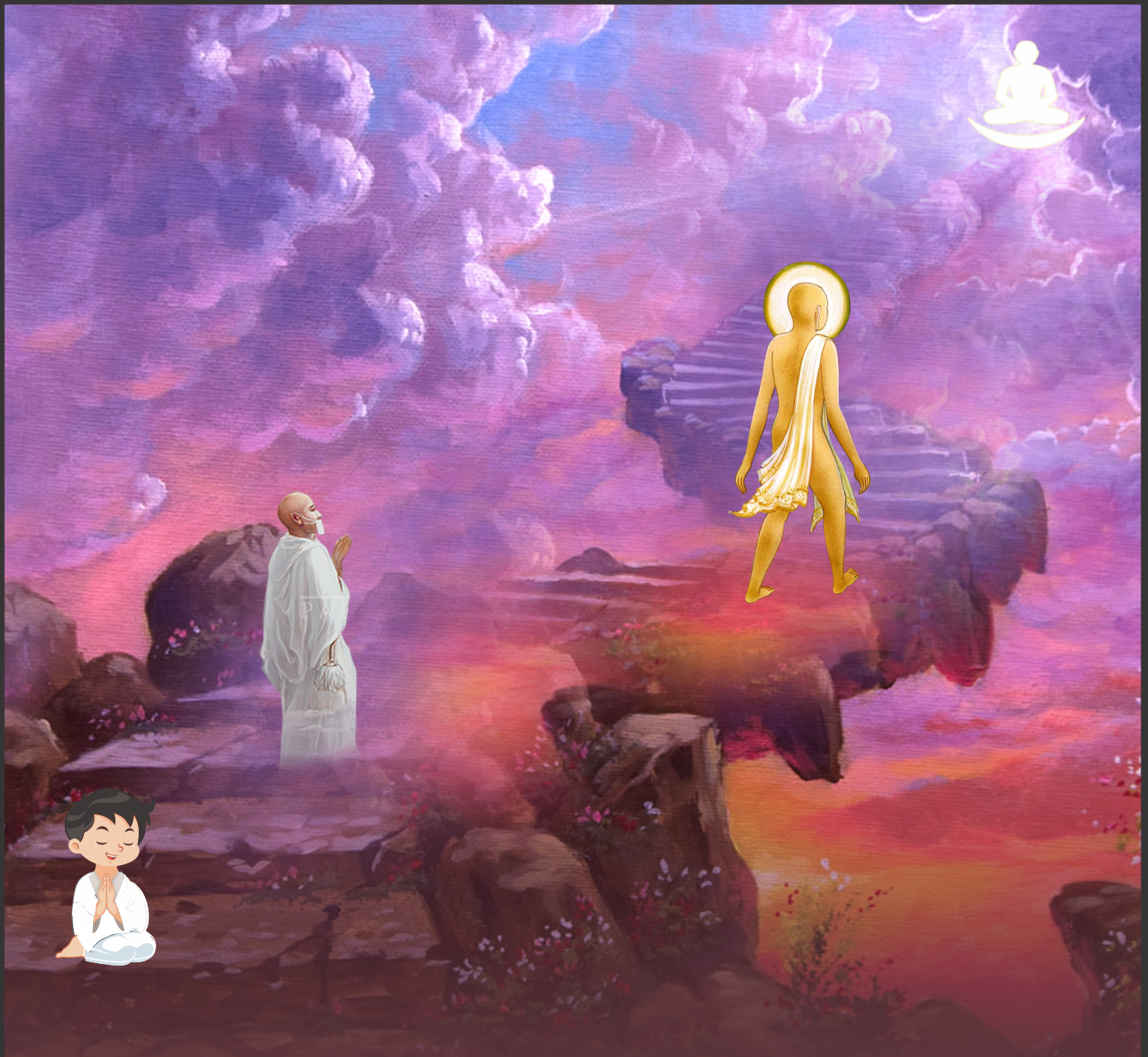
| | |
|--|---|
| | The gati of Human (Manushya Gati) मानव की गति (मानव गति) |
| | The gati of Dev (Devgati) या देवों की गति (देव गति) |
| | The gati of plants and animals (Tiryanch Gati) पौधों और जानवरों की गति (तिर्यंच गति) |
| | The gati of hellish beings (Narak Gati)? नरकीय प्राणियों की गति (नरक गति)? |

Naturally, we would aim for the (auspicious gati) **Sadd gati** - either as humans (Manushya Gati) or in Devgati, and would refrain to take birth in **inauspicious gati...** (**Dur gati**), such as that of animals and plants (Tiryanch Gati) or hellish beings (Narak Gati), right kids?

स्वाभाविक रूप से, हम **शुभ गतियों (सद्गति)** की ओर प्रयास करेंगे - या तो मानव गति में (मानव गति) या देवगति में, और **अशुभ गतियों (दुर्गति)** से बचेंगे, जैसे कि पौधों और जानवरों की (तिर्यंच गति) या नरकीय प्राण की (नरक गति), सही बच्चों?

Or you have **SPECIAL** plans?
क्या आपके पास **विशेष योजनाएं** हैं?





Or would you aspire for Siddha Gati ?Where walking on the footsteps shown by Parmatma, we will become ONE with Him! Decide for yourselves.

KIDS, your Future is in your Hands!

या फिर आप सिद्ध गति की **आकांक्षा** रखते हैं? जहां परमात्मा द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलकर, हम उनके साथ एकत्व को प्राप्त कर सकें! खुद के लिए निर्णय लें।

बच्चों, आपका भविष्य आपके हाथों में है!

Manushya Gati
मनुष्य गति

To be born as a human being, you must...
मनुष्य के रूप में जन्म पाने के लिए, आप...



Fear committing sins
पाप करने से डरे



Maintain equanimity
संभाव बनाए रहें



Engage in acts of kindness
उदारता के कार्य में लिप्त रहें



Be a true Shrivak
एक सच्चे श्रावक बनें



Tiryanch Gati-
तिर्यंच गति

Do you desire the Tiryanch Gati? Certainly not!
If you wish to avoid becoming a Tiryanch, you must...
क्या आप तिर्यंच गति की इच्छा रखते हैं? बिल्कुल नहीं!
यदि आप तिर्यंच बनने से बचना चाहते हैं, तो आपको:



Limit your indulgence in food and drinks.
खाने और पीने की आदत को नियंत्रित करना,



Stop stealing & avoid lying
चोरी न करें और झूठ न बोलें



Refrain from anger,
गुस्से से बचना,



Stop being greedy,
लालच को छोड़ना।





Inorder to take birth in Devgati you must...
देवगति में जन्म लेने के लिए आप...

Devgati?
देवगति?

Spread awareness of Jainism
जैन धर्म का प्रचार-प्रसार करें



Help others generously
उदारतापूर्वक सभी की मदद करें



Do penance and sacrifice
तप और त्याग करें



Take Diksha
दीक्षा लेने का प्रयास करें



Do you want to experience the pain, sorrows in hell?
No! Then you must...
क्या आप नरक में दर्द और
दुःख का अनुभव करना चाहते हैं? नहीं! तो आप...

Narak Gati
नरक गति

Stop misusing your senses
अपनी इन्द्रियों का दुरुपयोग ना करें।



Stop eating non-veg & alcohol
मांसाहार एवं शराब के सेवन से दूर रहें।



Stop being violent
हिंसा ना करें।



Stop causing pain to others
दूसरों को दुःख ना दें।



Let's try to transform our...



Ashubh bhaav (negative thoughts)
TO Shubh Bhaav (positive ones)

अशुभ भाव (नकारात्मक विचारों)
को शुभ भाव (सकारात्मक विचारों)
में परिवर्तित करने का प्रयास करें,



Shubh Bhaav (positive thoughts)
TO Shuddh Bhaav,
और हमारे शुभ भाव
को शुद्ध भाव में परिवर्तित करें,



thereby striving to attain the state of Siddha Gati.
जिससे हम सिद्ध गति को प्राप्त करने के लिए प्रयास करें।

As positive & good thoughts leads to Shubh bhaav... which in turn result in the accumulation of good deeds which leads to bondage of Punya and Sudd Gati.

Similarly, negative or bad thoughts leads to Ashubh bhaav... Ashubh bhaav result in the accumulation of bad deeds and bad karmas which in turn leads to bondage of Paap and Durgati.

सकारात्मक और अच्छे विचार, शुभ भाव की ओर ले जाते हैं... जो फिर अच्छे कर्मों का संचय करते हैं जो पुण्य और सदगति की प्राप्ति करवाते हैं।

उसी तरह, नकारात्मक या बुरे विचार, अशुभ भाव की ओर ले जाते हैं... अशुभ भाव बुरे कर्मों का संचय करते हैं जो फिर पाप और दुर्गति की प्राप्ति करवाते हैं।

परम गुरु वाणी

Param Gurudev says...

Always be a role model
for others
Live such a life
that inspires others!



Be the best version of your self
that inspires others to be their best version

Daddy,
I also want
to be helpful
to all.



What do you choose, when things go wrong?

OPTION-A

✓ Tick the bad
behavior you do.



You become angry ☐

You often cry ☐

You misbehave ☐

You risk losing friends ☐

You throw tantrums ☐

You shout on others ☐

You end up hurting others ☐

You resort to throwing things ☐

You stop talking to all ☐



Ultimately, all these actions will lead to the accumulation of
karma and unfavorable circumstances (Durgati).

OPTION-B

What you can choose,
when things go wrong?

✓ Tick the good
behavior you choose.



☐ I show kindness

☐ I maintain control

☐ I remain calm and composed

☐ I maintain my friendships

☐ I understand others

☐ I behave appropriately

☐ I behave respectfully

☐ I refrain from throwing objects

☐ I handle situations with patience

Ultimately, all these actions will lead to positive outcomes
and the accumulation of good karma (Sadd gati).

Here's how we can always maintain a positive mindset...
यहाँ हमें हमेशा सकारात्मक मनोवृत्ति बनाए रखने का चयन कैसे करना है...



ALWAYS TRY TO HELP OTHERS WHEREVER POSSIBLE WITH MANN-VACHAN-KAYA

When I spot an ambulance,
I'll say "Shubh Thao Aa Sakal Vishwa Nu"
for the person inside.

अगर मैं किसी एम्बुलेंस को देखता हूँ, तो मैं उसके
अंदर के व्यक्ति के लिए 'शुभ थाओ आ सकल विश्व नु' कहूँगा।



If I see someone in pain,
I'll send a wish with bhaav for their wellbeing
"Shubh Thao Aa Sakal Vishwa Nu" their way.

अगर मैं किसी को दर्द में देखता हूँ,
तो मैं उनके कल्याण के लिए भाव से शुभकामनाएं भेजूँगा
'शुभ थाओ आ सकल विश्व नु'।



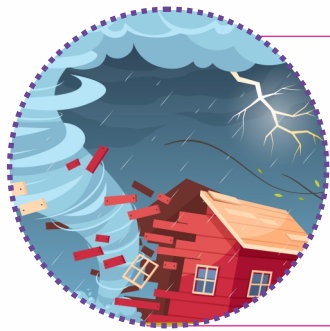
If someone falls and gets hurt,
I'll say "Shubh Thao Aa Sakal Vishwa Nu"
for their quick recovery.

अगर किसीको गिरकर चोट लगाती है,
तो मैं उनके जल्दी ठीक होने के लिए
'शुभ थाओ आ सकल विश्व नु' कहूँगा।



If an old person is feeling lonely,
I'll send them good wishes
"Shubh Thao Aa Sakal Vishwa Nu".
अगर किसी बुजुर्ग व्यक्ति को
अकेलापन महसूस हो रहा है, तो मैं उनको
'शुभ थाओ आ सकल विश्व नु' के भाव भेजूँगा।





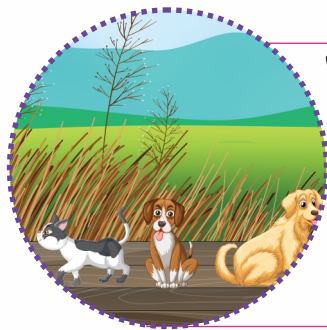
When I hear/see about a natural disaster,
I'll pray for the people affected
"Shubh Thao Aa Sakal Vishwa Nu".

जब मैं प्राकृतिक आपदा के बारे में सुनता हूँ,
तो मैं उससे प्रभावित लोगों के लिए
‘शुभ थाओ आ सकल विश्व नु’ के जप करूँगा।



If a friend is having a tough day,
I'll quietly say
"Shubh Thao Aa Sakal Vishwa Nu" for them.

अगर किसी दोस्त का दिन कठिन हो रहा है,
तो मैं उनके लिए चुपके से
‘शुभ थाओ आ सकल विश्व नु’ कहूँगा।



When I come across stray animals, birds, insects, etc.,
I'll offer the prayer "Shubh Thao Aa Sakal
Vishwa Nu" for their well-being.

जब मैं रास्ते पर भटकते हुए जानवर, पक्षियों, कीटों
आदि को देखता हूँ, तो मैं उनके कल्याण के लिए
‘शुभ स्थाव आ सकल विश्व नु’ का प्रार्थना करूँगा।



Before bedtime, I'll say
"Shubh Thao Aa Sakal Vishwa Nu" for my family
and friends, wishing them a good luck ahead .
सोने से पहले, मैं अपने परिवार और दोस्तों के लिए
‘शुभ थाओ आ सकल विश्व नु’
कहूँगा और उनके अच्छे दिन की शुभकामना करूँगा।



Is it easy to do? Absolutely, it's easy and fun to do! By following these simple steps, you can embrace the quality of Shubh Bhaav in you.

क्या यह करना आसान है? बिल्कुल, यह करना बहुत आसान और मजेदार है! इन साधारण नियमों का पालन करके, आप अपने अंदर शुभ भाव की गुणवत्ता को अपना सकते हैं।

Children, let's learn about the outcomes of **Ashubh Bhaav**, **Shubh Bhaav**, and **Shudh Bhaav** through the life story of Parmatma Shree Mahavir Swami.

आइए बच्चों, हम **अशुभ भाव**, **शुभ भाव** और **शुद्ध भाव** के परिणामों को परमात्मा श्री महावीर स्वामी के जीवन चरित्र से सीखते हैं।

Ashubh Bhaav



In His 18th Bhav, Parmatma Mahavir was born as a king named Triprushtha Vasudeva. One morning, Vasudeva became angry on the attendant as he did not follow his orders. Vasudeva said to his servants, "Pour hot molten lead in the ears of this music buff as a punishment for disobeying the order."

Vasudeva's command was obeyed. The bed attendant, writhing in terrible pain and screaming, died.

१८वें भाव में परमात्मा त्रिपृष्ठ वासुदेव थे। एक दिन, सुबह होने पर वासुदेव क्रोधित हो गए क्योंकि शर्यापालक ने राजा के आदेश का उल्लंघन किया था। वासुदेव शर्यापालक को दंडित करने का आदेश दिया। उन्होंने अपने सेवकों से कहा, 'जाओ, शीशा गर्म करके शर्यापालक के दोनों कानों में डाल दो, आदेश का उल्लंघन करने के लिए यही सज़ा है।' वासुदेव की आज्ञा का पालन हुआ जिससे भयंकर वेदना से छटपटाते हुए-चीखते शर्यापालक के प्राण परवरु उड़ गये और उनकी मृत्यु हो गई।

Negative actions such as anger, hurting others, causing pain and suffering, have consequences that all must endure. Due to these negative actions, Parmatma not only had to take rebirth in Narak gati (hell) and Tiryanch gati (animal births) but also had to bear the consequences of these negative deeds in His last birth. Let's see how these negative emotions and actions affect Parmatma in the 27th Bhav.

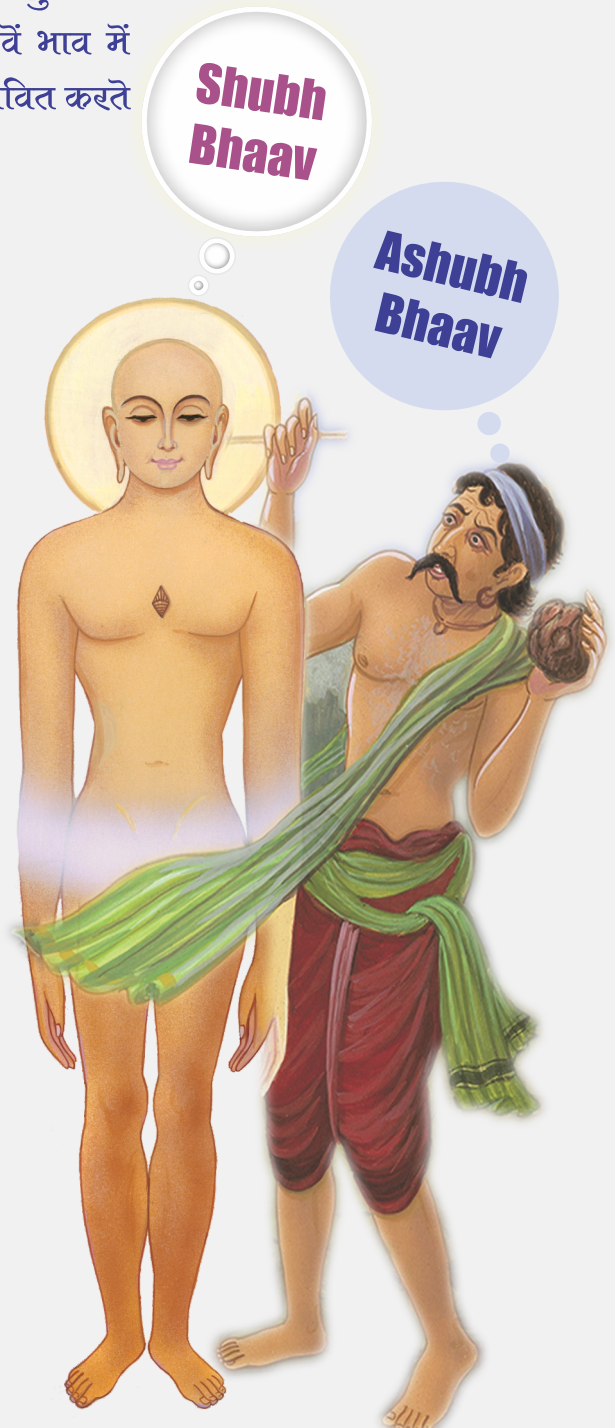
अशुभ भाव जैसे क्रोध करना, अन्ध को दंड देना, पीड़ा देना, वेदना पहुंचाना आदि के कर्मों के परिणाम सभी को भुगतने पड़ते हैं। इन अशुभ कर्मों के कारण, परमात्मा नरक और तिर्यंच गतियों में भ्रमण करने का साथ अपने अंतिम भव में भी इन अशुभ कर्मों का फल भुगतना पड़ता है। आइए हम देखें कि २७वें भव में परमात्मा को ये अशुभ भाव और कर्म किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

In the 27th bhav, one day, while Parmatma was deeply immersed in meditation, a cowherd, angered by Parmatma's apparent neglect of his bulls, punished him. The cowherd inflicted severe pain by driving wooden spikes into Parmatma's ears and cutting off the protruding parts so they couldn't be easily removed.

Here, the cowherd committed Ashubh Bhaav and Ashubh karma!

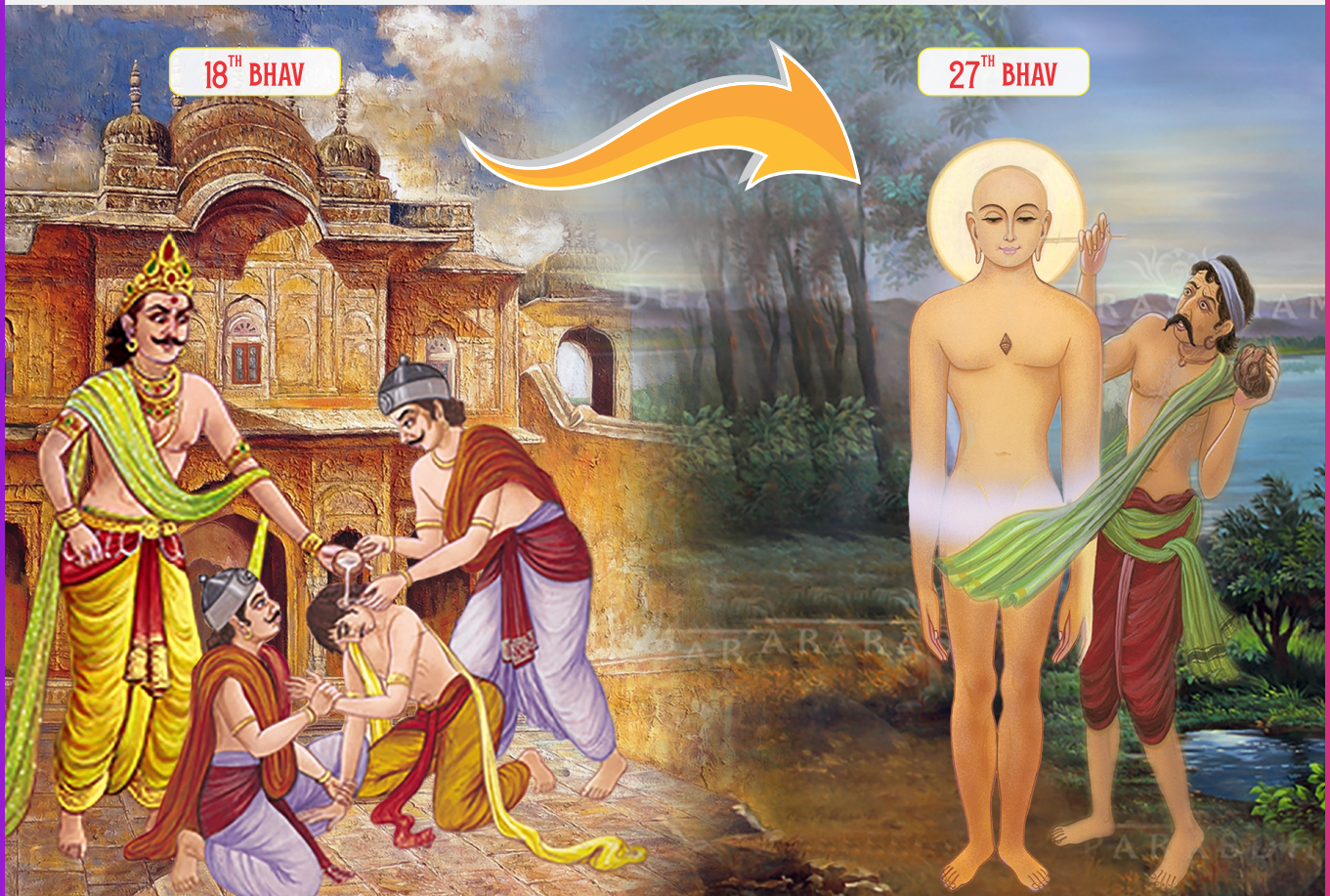
२७वें भव में एक दिन एक दिन, जब परमात्मा गहरी ध्यान में थे, तब एक ग्वाला, अपने बैलों की अनदेखी के कारण परमात्मा को गुस्से में दंडित करते हुए, उनके कानों में लकड़ी के कील घोंपकर उन्हें बहुत दर्द पहुंचाया और उनके बाहरी भागों को काट दिया ताकि वे आसानी से न निकाले जा सकें।

यहाँ ग्वाले ने किया अशुभ भाव एवं अशुभ कर्मों का बंध...



This was a consequence of the Ashubh Bhaav and Ashubh actions done in the 18th Bhav as Vasudev. The outcome of negative thoughts/actions is always negative.

यह १८^{वें} त्रिपुष्ट वासुदेव के भव में परमात्मा के जीव ने किए गए अशुभ भाव और अशुभ कर्मों का परिणाम था। अशुभ भाव या कर्मों का परिणाम हमेशा अशुभ ही होता है।



Fruit of actions: From intention to experience.
कर्मफल: अशुभ भाव से भोगने तक।

Children, the takeaway here is that even Parmatma cannot escape from the consequences of His karma. He too had to face the results of His actions.

Therefore, always strive to maintain positive- Shubh Bhaav and pure intentions- Shudh Bhaav to attain Siddhatva.

बच्चों, यहाँ से सीखने का संदेश है कि परमात्मा भी अपने कर्मों के परिणाम से बच नहीं सकते। उन्हें भी अपने किए गए कर्मों के परिणामों का सामना करना पड़ता है।

इसलिए, हमेशा सकारात्मक - शुभ भाव और शुद्ध इरादे बनाए रखने का प्रयास करें ताकि सिद्धत्व को प्राप्त किया जा सके।



Despite the intense suffering, Parmatma remained steadfast in meditation, without harboring any anger or resentment towards the cowherd. **THIS IS KNOWN AS "SHUBH BHAAV."**

Parmatma also endured all other upsargs with peace. Due to His forgiving nature, **HE ALWAYS REMAINED IN PURE THOUGHTS - SHUDH BHAAV, AND IN THE END, HE BECAME SIDDHA.**

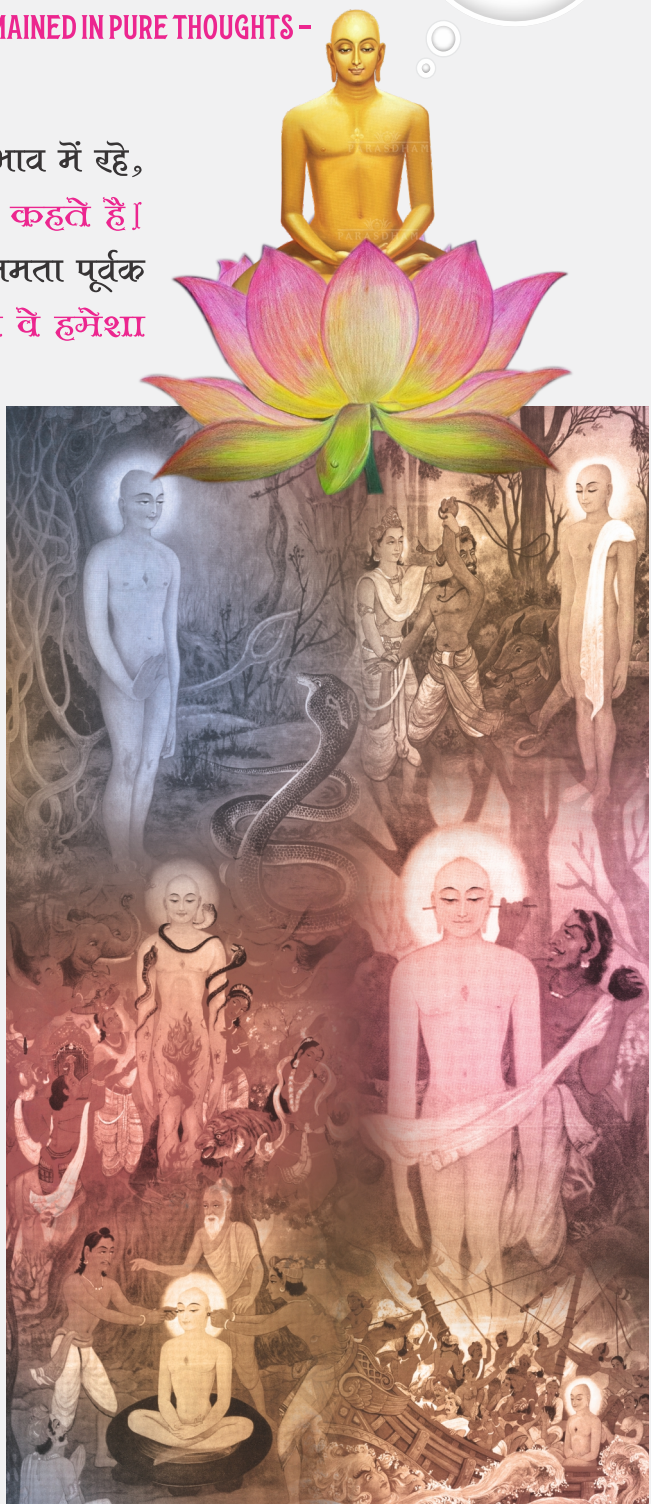
ऐसे दुःखद कष्ट में भी, परमात्मा समभाव में रहे, शांत रह, **एसी सहनशीलता को शुभ भाव कहते हैं।**
परमात्मा ने अन्य सभी उपसर्गों को क्षमता पूर्वक सहन किया। **ऐसे क्षमाशील होने के कारण वे हमेशा शुद्ध भावों में रहते और वे सिद्ध बन गए।**

So kids when are you
starting your journey
from...

Ashubh to Shubh
& from
Shubh to Shudh
& Shudh to **SIDDH...**

बच्चों, तो आप कब
अपना सफर
शुरू कर रहे हैं...
अशुभ से शुभ
और शुभ से शुद्ध
और शुद्ध से **सिद्धि...**

**SHUDH
BHAAV**



My Daily Bhakti

Shubh thao aa sakal Vishvanu (4)

Maitri bhaav nu pavitra jharnu (4)

Mujh haiya ma saday vahetu (4)

Karuna bhaav thi rahe dhabaktu (2)

Kalyan thao sarvnu jag ma (2)

Shubh thao sarvnu jag ma (2)

Shrey thao sarvnu jag ma - (2)

Shubh thao (8)

Prabhu Tara jeva mara vicharo ho (4)

Pal pal jatna nu vardaan aapjo (4)

Prabhu Tara jeva mara aacharo ho (2)

Pal pal mujh ne jagto rakhjo (2)

Kalyan thao sarvnu jag ma (2)

Shubh thao sarvnu jag ma (2)

Shrey thao sarvnu jag ma - (2)

Shubh thao (8)

Sarva na dukh ne hu anubhavu (4)

Evi vedna hridaye pragtavjo (4)

Sarvana dukh ne door Kari shaku (2)

Evi patrata Prabhu Mane aapjo (2)

Kalyan thao sarvnu jag ma (2)

Shubh thao sarvnu jag ma (2)

Shrey thao sarvnu jag ma - (2)

Shubh thao (8)

